अलंकार (2 marks)

मुख्य रूप से अलंकार के तीन भेद है-
1. शब्दालंकार
2. अर्थालंकार
3. उभयालंकार

शब्दालंकार

1. अनुप्रास अलंकार
2. यमक अलंकार
3. श्लेष अलंकार
4. वक्रोक्ति अलंकार

1. अनुप्रास - जब किसी वर्ण की आवृत्ति दो या दो से अधिक बार हो वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

1. तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाये।
2. चारु चंद्र की चंचल किरणें, खेल रही थी जल-थल में।
3. कूलन में केलिन में कछारन में, कुंजों में
क्यारियों में, कलि-कलीन में बगरो बसंत है।

Q. No.

२. यमक - जहाँ शब्दों, शब्दांशों या वाक्यांशों की आवृत्ति होती है किंतु अर्थ भिन्न होता है वहाँ यमक अलंकार होता है।

१. कनक कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय।
कनक - सोना कनक - धतूरा

२. केकी रव की नुपूर - ध्वनि सुन।
जगती - जगती की मूक प्यासी
जगती - जागना, जगती - जगत

३. श्लेष - जब एक ही शब्द के विभिन्न अर्थ मिलते हैं तब श्लेष अलंकार होता है। यहाँ शब्द का प्रयोग एक ही बार किया जाता है परंतु कई अर्थ निकलते हैं।

१. रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गए न उबरै, मोती मानुष चून।

२. जो रहीम गति दीप की, कुल कपूत गति सोय।
बारे उजियारे करै, बढ़े अँधेरा होय।

Scanned with CamScanner

4. वक्रोक्ति - वक्ता के कथन को श्रोता द्वारा के अभिप्रेत आशय से चमत्कार पूर्ण भिन्न अर्थ लगाया जाए, वक्रोक्ति अलंकार होता है।

1. मैं सुकुमारिनाथ वन जोगू।
2. को तुम? है घनश्याम हम।

Scanned with CamScanner

Q. No.

अर्थालंकार

1. रूपक अलंकार
2. उपमा अलंकार
3. उत्प्रेक्षा अलंकार
4. अतिश्योक्ति अलंकार
5. दृष्टांत अलंकार

1. रूपक अलंकार - एक वस्तु के साथ दुसरी वस्तु को इस प्रकार रखना कि दोनों आपस में मालूम हो, वहाँ रूपक अलंकार होता है। अर्थात दोनों में कोई अंतर दिखाई नहीं पड़ता।

1. ऊधो, मेरा हृदयतल था एक उद्यान न्यारा।
शोभा देतीं अमित उसमें कल्पना - व्यष्टियाँ भी॥

2. पायो जी मैंने राम-रतन धन पायो।
3. चरण-सरोज पखारन लागा।
4. सिंधु-सेज पर धरा-वधू।
अब तनिक संकुचित बैठी-सी॥

Scanned with CamScanner

2. उपमा अलंकार - जहाँ किसी एक वस्तु की तुलना दूसरी लोक प्रसिद्ध वस्तु से रूप, रंग, गुण, धर्म या आकार के आधार पर की जाती है; वहाँ उपमा अलंकार होता है।

१. चरण - कमल - सम कोमल।
२. राधा - वदन चंद सो सुंदर।
३. जिमु बिनु देह, नदी बिनु वारी।
तैसे ही अनाथ, पुरुष बिनु नारी।
४. ऊँची - नीची सड़क, बुढ़िया के कूबड़ - सी।
नंदनवन - सी फूल उठी, छोटी - सी कुटिया मेरी।
५. मोती की लड़ियों से सुंदर, झरते हैं झाग भरे निर्झर।
६. पीपर पात सरिस मन डोला।

3. उत्प्रेक्षा अलंकार - जहाँ पर उपमेय में उपमान की संभावना प्रकट की जाए या उपमेय को ही उपमान मान लिया जाए, वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है।
उत + प्र + ईक्षा = अर्थात प्रकट रूप में देखना।
इस अलंकार में मानो, जनु - जानहुँ, मनु - मानहुँ जैसे शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

Scanned with CamScanner

Q. No.

उदाहरण -

(1) सोहत ओढ़े पीत पट श्याम सलोने गात।
मनो नीलमनि सैल पर, आतप पर्‌यो प्रभात॥

(2) उस क्रोध के मारे तनु उसका काँपने लगा।
मानो हवा के जोर से सोता हुआ सागर जगा॥

(3) लता भवन ते प्रगट भए तेंहि अवसर दोउ भाइ।
निकसे जनु जुग विमल विधु, जलद पटल बिलगाई॥

(4) जान पड़ता है नेत्र देख बड़े-बड़े।
हीरकों में गोल नीलम हैं जड़े॥

(5) झूठे जानि न संग्रही, मन मुँह निकसै बैन।
याहि ते मानहुँ किए, बातनु को विधि नैन॥

4. अतिशयोक्ति अलंकार - अतिशयोक्ति अर्थात अत्यंत बढ़ा-चढ़ाकर कही गई बात।

उदाहरण -

(1) पत्रा ही तिथि पाइयो, वा घर के चहुँ पास।
नित प्रति पून्यो रहयो, आनन-ओप उजास॥

Scanned with CamScanner

(2) हनुमंत की पूँछ में लग न पाई आग।
लंका सगरी जल गई, गए निशाचर भाग॥

(3) पड़ी अचानक नदी अपार।
घोड़ा उतरे कैसे पार॥
राणा ने सोचा इस पार।
तब तक चेतक था उस पार॥

2. दृष्टांत अलंकार - दृष्टांत का अर्थ है उदाहरण देना। किसी बात की सत्यता प्रमाणित करने के लिए उसी ढंग की कोई दूसरी बात कही जाती है। जिसमें पूर्व कथन की प्रामाणिकता सिद्ध हो जाए; वहाँ दृष्टांत अलंकार होता है।

उदाहरण -

1. करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात है, सिल पर पड़त निसान॥
2. सबै सहायक सबल के, कोउ न निबल सहाय।
पवन जगावत आग हीं, दीपहिं देत बुझाय॥
3. एक म्यान में दो तलवारें, कभी नहीं रह सकती हैं।
किसी और पर प्रेम पति का, नारियाँ नहीं सह सकती हैं॥

Scanned with CamScanner